16

SUCCESS MANTRAS

सफलता के 16 मंत्र

a e-book by
www.motivationalstoriesinhindi.in

Ed. 2016-2017

All right reserved. No part of this e-book may be reproduced, stored in retrieval system or transmitted in any form or by any means – electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise – without the prior permission of the author.

16 सक्सैस मंत्र

(1)

एक विघार्थी की भांति आप किसी को अपना आदर्श बनाएं, जो सही मार्ग–दर्शन करता रहे।

महाभारत काल में **एकलव्य** नाम का एक निर्धन बालक हुआ है, जो घोर अभाव में रहते हुए भी एक सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बनने की ऊँची ललक अपने मन में लिए था। अपने इस जीवन उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने एक महान् आचार्य से धनुर्विधा सीखने का लक्ष्य बना लिया और वह उन गुरू द्रोणाचार्य के आश्रम में जा पहुंचा। उन्होंने उसे शिक्षा देने से इंकार कर दिया, क्योंकि वह शूद्र–पूत्र था। यह जानकर एकलव्य बिलकुल निराश नहीं हुआ, बल्कि उत्साहित होकर उसने अपना आत्मबल बढ़ाया और अपनी गहरी रूचि के अनुकूल महान् तीरंदाज बनने का मन में दृढ़ संकल्प करके वह जंगल में चला गया। उसने मिट्टी से द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाई, उन्हें अपना गुरू मानकर प्रणाम किया और फिर धनुर्विधा के अभ्यास में एकाग्रमन से जुट गया। सभी बाधाओं को पार करते हुए वह कुछ समय बाद इस विघा में इतना निपुण हो गया कि एक दिन उसने अपने सात बाणों से एक कुत्ते का मुंह बांध दिया। वह कुत्ता अर्जुन का था, जो गुरू द्रोणाचार्य का शिष्य था। अर्जुन एकलव्य की कौशलपूर्ण चातुर्य बुद्धी एवं निपुणता को देखकर स्तब्ध रह गया। उसने तुरंत आश्रम में जाकर गुरू को यह आखों देखा हाल सुनाया। द्रोणाचार्य ने तत्काल उस बालक से मिलकर जब उसके गुरूदेव का नाम पूछा, तो उसने उन्हीं की मूर्ति उन्हें दिखाकर – 'आप ही मेरे गुरूदेव है।' यह सुनकर उसी समय गुरूजी ने एकलव्य से गुरू–दक्षिणा के रूप में उसके सीधे हाथ का अंगूठा मांगा और उसने सहर्ष ही अपना अंगूठा काटकर उनके चरणों में अर्पित कर दिया।

चूँकि एकलव्य ने मिट्टी से निर्मित मूर्ति को ही अपना गुरू मानकर उसमें विश्वास पैदा किया था, इस विश्वास की शक्ति ने ही उसका आत्मविश्वास बढ़या और इस विश्वास के बल पर ही वह एक सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी बन गया था। इसी प्रकार अर्जुन ने सर्वप्रथम श्रीकृष्ण को गुरूपद पर आसीन कर उनके उपदेश ग्रहण किए थे और तब कहीं वह अपने लक्ष्य की सिद्धी में सफल हो पाया था।

Alexander of Macedon ने कहा है –

"I am indebted to my father for living, but to my teacher for living well."

(2)

सफलता एक अहसास है, जो अंदरूनी है। यह अहसास आप तब करते हैं, जब आपने सही काम सही ढंग से पूरा करके अपने समयबद्ध लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।

सफलता एक अहसास है, जिसे महसूस किया जा सकता है, लेकिन उसे मापा नहीं जा सकता। इसका सीधा संबंध मन की शांति से हैं। दरअसल, सफलता और संतोष दोनों साथ–साथ चलते हैं। संतोष हमारे अंदर की वस्तु है, बाहा नहीं है। यदि हम अपने कार्य की सम्पन्नता से पूर्णतः संतुष्ट हैं तो यह हमारी सफलता है, भले ही लोग बाहरी रूप से हमें उतना सफल न मानें।

सकारात्मक दृष्टी से संतुष्ट व्यक्ति को सादगी अधिक प्रिय लगती है और वह अपनी सफलता का बखान करना पसंद नहीं करता, क्योंकि सफल व्यक्ति की खूबियां स्वतः ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं।

Rochefoucauld ने कहा है –

"Any Success which leaves a bad aftertaste is failure."

(3)

पुरूषार्थ इसी में है जब आप दूसरों को बताएं अपनी गलतियां और साथ में सुधार की प्रक्रिया, जिससे उन्हें सफलता का मार्ग–दर्शन मिले।

सकारात्मक दृष्टि से सच्ची सफलता का अहसास तब होता है, जब आप एक सफल व्यक्ति के रूप में दूसरों का मार्गदर्शन करते हैं अपनी उन गलतियों को बताकर, जिनके कारण आपको पिछली बार असफलता मिली, जिससे वे संभलकर आगे बढ़ें। असफलता का जिक्र किए बिना कोई पुरूषार्थ नहीं है, सकारात्मक सोच नहीं है। अतः आपको चाहिए कि आप समाज को बताएँ –

- वे गलतियाँ जो आपसे हुई,
- उनके कारण, और
- गलतियों को सुधारने की प्रक्रिया, जो आपने अपनाई।

तभी आप समाज के लोगों से कहें कि 'गलतियां न करें।' इससे दूसरों में यह चेतना पैदा होगी कि जिस रास्ते पर चलकर आपने ठोकरें खाई और उससे नुकसान उठाया, वे फिर अपने विवेक का इस्तेमाल करके उस मार्ग को न अपनाकर सही मार्ग पर चलेंगे और नुकसान से बचेंगे। तब आप महान् कहलाएंगे, आपके स्वरूप में मानवता के दर्शन होंगे और लोग आपको अपना आदर्श मानकर आपके स्वरूप में मानवता के दर्शन होंगे और लोग आपको अपना आदर्श मानकर आपके बताए मार्ग पर चलेंगे।

अतः दूसरों की भलाई करते हुए स्वयं की उन्नती करने में ही मानव जीवन की सार्थकता है, केवल उन्हें दूर से सुनहरे सपने दिखाने में नहीं। इसी में आपकी सच्ची सफलता है।

Albert Einstein (1879-1955) ने कहा है –

"Try not to become a man of success but rather try to become a man of value."

(4)

कार्य को चुनौती के रूप में लें। याद रखें – "जितनी बड़ी चुनौती, उतना बड़ा हौसला और उतनी ही बड़ी सफलता।"

लक्ष्य–सिद्धि के मार्ग में मनुष्य को अनेक कठिनाइयां एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सम्भव है कि कहीं –

- उसे आलस्य और प्रमाद घेर लें,
- राह में कुछ प्रलोभन मोहित करे,
- वह अनयास ही विपत्ति का अनुभव करने लगे,
- उसके मन में असुरक्षा का भाव उपज आए,
- उसे कड़ी स्पर्द्धा (Grinding Competition) सामने नजर आए, और

- उसके मन में असफलता का भय पैदा हो जाए, आदि।

जब हनुमान को यह अनुभूति हो गई कि उनका जीवन श्री राम के कार्य के लिए ही है और उन्हें सीता जी की सुधी लेने का कार्यभार सौंपा गया है, तो उनका एकमात्र लक्ष्य था– सीता माता की खोज।

लेकिन यह काम सहज नहीं था–एक ओर विशाल सागर और दूसरी ओर उनकी राह रोकने के लिए खड़ी सुरसा। सबसे पहले मैनाक पर्वत ने उनसे आग्रह किया – 'हनुमान! थोड़ा विश्राम कर लो, तब चले जाना।' लेकिन उनका उत्तर था – **'रामकाज किए बिना मोही कहां विश्राम।'** मैनाक नहीं माना और ऊपर उठा। हनुमान ने उसे पैर से स्पर्श किया और ये आगे बढ़ गए। अब सुरसा मिली जो उन्हें खाना चाहती थी। उसने अपने मुख का जितना विस्तार किया, उतना ही बड़ा आकार हनुमान ने अपनी दक्षता से किया और अंत में उससे आशीर्वाद प्राप्त कर वे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ गए।

इस उदाहरण से ये बातें स्पष्ट हो जाती हैं–

- हनुमान ने 'सीता माता की खोज' को एक चुनौती (Challenge) के रूप में स्वीकार किया था।
- चुनौती से संकल्पबद्ध होकर वे आलस्य व प्रमाद रूपी मैनाक के चंगुल में नहीं फंसे।
- उन्होंने साहसपूर्ण जोखिम भरे कार्य को अपनी योग्यता एवं दक्षता से पूरा किया।
- चुनौती ने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए उनका उत्साहवर्धक किया।

आखिर 'चुनौती' है क्या ?

चुनौती' प्रभावशाली व्यक्तित्व (Dynamic Personality) का विशेष आंतरिक गुण (Intrinsic Quality) है, जो प्रेरक–शक्ती रूप में लक्ष्य–सिद्धि के लिए व्यक्ति को साहसी, उत्साही और संर्घषशील बनाने का आह्वान करता है। **चुनौती...**

- व्यक्ति के अन्दर कठिन–से–कठिन कार्य करने का साहस पैदा करती है,
- उसे जोखिम भरे कार्य करने को प्रेरित करती है,
- उसकी छिपी प्रतिभा (latent talent), योग्यता एवं क्षमता को बाहर निकालती है, और
- कार्य–लक्ष्य की सिद्धी के लिए उसका उत्साहवर्धन करती हैं।

इसलिए Travis White ने लिखा है–

"Dream can often become challenge but challenges are what we live for."

'चुनौती' का अंग्रेजी शब्द 'CHALLENGE' नौ अक्षरों से युक्त है और इसका प्रत्येक अक्षर सफलता का गुण लिए है, जो इस शब्द की शक्ति का साकार करते हैं। आइए, इस का विश्लेष्ण कर इसकी विशेषताएं अग्रलिखित तालिका में देखें।

चुनौती की विशेषताएँ
C – Courage + Concentration
H – Hope for Success (Positive Attitude)
A – Adventures (Risk-taking)
L – Leadership (Personality)
L – Logical Mind (Problem-solving)
E – Eagerness
N – Need of Patience
G – Goals (For Achievement)
E - Enthusiasm

(5)

कठिन परिश्रम के साथ संयम और धैर्य को अपने नित्य अभ्यास में लें। याद रखें, नोहा वेब्स्टर को अपनी डिक्शनरी के संकलन में 36 वर्ष लगे थे।

धैर्य एक बड़ा वरदान है। जो धैर्यवान है, वह सफलता की चोटी पर पहुंचने का अधिकारी है। अधीरता व्यक्ति को सदा पीछे धकेलती है। धीरज रखने वाले व्यक्ति ही सहनशील कहलाते हैं जो सुख और शान्ति को प्राप्त होते हैं। एक उदाहरण –

कुरू प्रदेश की रानी ने सेवकों को आज्ञा दी कि उसके प्रदेश में गौतम बुद्ध के आगमन पर वे उनका अनादर करें। बुद्ध के आने पर लोगों ने उन्हें 'मूर्ख' आदि शब्दों से सम्बोधित करना शुरू कर दिया, पर

बुद्ध शान्त ही रहे। उनके शिष्य आनन्द से न रहा गया और वह बोला – 'भंते! हमें यहां से चले जाना चाहिए।' बुद्ध ने पूछा – 'कहां जाना चाहते हो?' आनन्द ने उत्तर दिया – 'किसी दूसरे नगर में जहां हमें कोई अपशब्द न कहे।' बुद्ध ने कहा – 'वहां भी कोई दुर्व्यवहार करे तो ?' 'किसी अन्य स्थान को चले जाएगें' – शिष्य ने कहा।

बुद्ध ने कहा – 'नहीं..... जहां दुर्व्यवहार हो, उस स्थान को तब तक नहीं छोड़ना चाहिए, जब तक वहां शान्ति स्थापित न हो जाए। जिस प्रकार हाथी चारों ओर के तीरों को सहसा रहता है, हमें दुष्ट पुरूषों के अपशब्दों को सहन करते रहना चाहिए। लोग तो वश में किए हुए खच्चरों, घोड़ों तथा जंगली हाथियों को उत्तम मानते हैं, किन्तु सबसे उत्तम तो वह है, जो स्वयं को वश में रखे और कभी उत्तेजित न हो।'

Andres Segovia ने कहा है–

"A man without patience is lamp without oil"

(6)

जोखिम (Risk) ओर साहस (Vigour) इन दानों से हासिल होती है ऊची उपलब्धियां।

सन् 1950 में इंग्लैंड में जन्मे **रिचर्ड ब्रेनसन** एक ऐसे साहसी और सफल व्यक्ति हैं जो अपनी शारीरिक कमजोरियों को पीछे धकेलते हुए व्यापार क्षेत्र में आगे बढ़े और बढ़ते ही रहे हैं। और उन्हें ब्रिटेन का सर्वश्रेष्ठ व्यवसायी घोषित किया गया। उन्होंने सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए कई जोखिमें उठाकर नए आयाम बनाने की पहल की, जिसमें वे सफल हुए। मात्र 16 साल की उम्र में उन्होंने एक अखबार "Student at the age of Sixteen" निकाला, जिसका उद्देश्य था – स्कूलों को आपस में जोड़ना। उन्होंने पढ़ाई छोड़कर, म्यूजिक इंडस्ट्री में प्रवेश कर, डिस्काउंट मूल्य पर रिकॉर्ड बेचना शूरू किया और 1972 में अपना पहला स्टुडियो ऑक्सफोर्डशायर में खोला। सन् 1984 में रिचर्ड ने 'वर्जिन एअरलाइंस' की स्थापना की, जिसे आज ब्रिटेन की दूसरे नंबर की अंतरराष्ट्रीय उड़ान भरने वाली कंपनी बनाने का उन्होंने गौरव प्राप्त किया है। इसी प्रकार उनकी 'वर्जिन कोला' भी सॉफ्ट ड्रिंक के क्षेत्र में अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है। हाल ही में ब्रेन्सन ने जमीन के साथ ही पानी में भी चलने वाली कार से इंग्लिश चैनल पार करने की

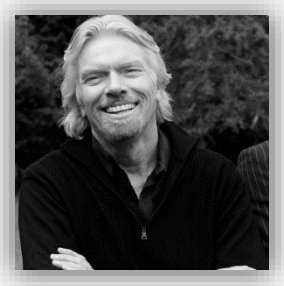

योजनाआ बनाई और कहा है कि वह बिना किसी सहयाता के अपनी एकवाड्रा कार से इंग्लिश चैनल पार कर एक नया रिकॉर्ड बनाएंगे।

व्यापार में 'जोखिम' और 'साहस' की विशेष जरूरत होती है। इन दो को व्यापार का मूलमंत्र मानकर ब्रेनसन छोटी–सी उम्र में एक न्यू 'एंटरप्रिन्योर' के रूप में सामने आए और अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल कर नए–नए आयाम बनाने की पहल करते रहे। **कोई भी सफल व्यापारी या उघोगपति 'बाधा' और 'असफलता' से अछूता नहीं रहा है।** रिचर्ड इनको पीछे छोड़कर आगे बढ़ते रहे हैं। वे अपने तरीके से लक्ष्यों का निर्माण कर उनका समयबद्ध 'एक्शन प्लान' बनाते हैं और अपनी दृढ़ इच्छा–शक्ति, साहस, जोखिम, कठिन परिश्रम तथा विश्वास के साथ सफलता की सीढ़ियों पर बढ़ते चले जाते हैं। **वे आने वाले कल को ध्यान में रखकर आज जो मौका उनके पास हैं, उनका भरपूर फायदा उठाते हैं** और इस प्रकार अतीत की बाधा और असफलता का डर उनके दिलो–दिमाग में नहीं रहता। ऐसे प्रभावी तरीके से वे अपनी सोच बनाए रखते हैं। इसलिए रिचर्ड ब्रेनसन न केवल व्यापारी वर्ग के लिए 'रोल मॉडल' हैं, बल्कि उन लोगों के लिए भी एक प्रेरणादायी शख्स है, जो अपनी शारीरिक कमजोरियों के चलते स्वयं को असफल मान चुके हैं। जब भी ब्रेनसन का नाम लिया जाता है, तो बस एक ही शब्द सामने आता है – **'सफलता'।**

Robert Browning ने कहा है–

"It was roses, roses, all the way."

(7)

क्रियाशील बने रहने के लिए यह जरूरी है कि आप कार्य के प्रति अपनी पूरी जिम्मेदारी समझें और यह तभी संभव है जब आप टालमटोल की प्रवृत्ति से दूर रहते हैं।

सकारात्मक दृष्टि से आपकी जिम्मेदारियाँ होती हैं–

- खुद के लिए,
- परिवार के लिए, अपने पेशे,व्यवसाय, दफ्तर के लिए
- समाज एवं देश के लिए, तथा
- अपनी भावी उन्नति के लिए।

कुशलतापूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में ही अपने काम की संपूर्णता है, जो आपकी सफलता है। सफलता में ही आत्मगौरव है, आत्मसम्मान है। **ध्यान रहे–**

- बिना जिम्मेदारी स्वीकारे किसी कार्य के लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो सकती।
- जब आप जिम्मेदारियाँ नहीं स्वीकारेंगे, तो स्वयं को महत्वपूर्ण कैसे बना सकेंगे? अर्थात् अपना ऊँचा स्वाभिमान (High Self-esteem) कैसे बनाएँगे?
- अगर जिम्मेदारी–भरा व्यवहार नहीं करेंगे, तब आने वाली पीढ़ियों के लिए आप क्या आदर्श स्थापित करेंगे?

जिम्मेदारियों को स्वीकारने का एक सरल तरीका यह है कि आप इन्हें अपने कर्त्तव्य के रूप में ले। आत्म–शक्ति आपको कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करेगी। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्त्तव्य–परायण बनाकर उसके खोए हुए स्वाभिमान को उसे वापिस दिलाया था।

याद रखें .....

टालू–प्रवृत्ति वाले व्यक्ति ही जिम्मेदारी लेने से कतराते हैं, क्योंकि वे आज के काम को कल पर टाल देते हैं और वह काम कभी पूरा नहीं हो पाता। एक दिन वही काम बोझ लगने लगता है। टालू–प्रवृति ही आल्सय को जन्म देती है, जो अनर्थ की जड़ है। जब आलस्य किसी के शरीर पर चढ़ जाता है, तब उसमें काम के प्रति बेमन और निरूत्साह पैदा कर देता है, जिससे उसका एक महत्वपूर्ण दिन निरर्थक बीत जाता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि टालू–प्रवृति के पनप जाने से मन की ऐसी अवस्था हो जाती है कि ज्ञान छिप जाता है और अज्ञान (Ignorance) छा जाता है। अतः जरूरी है कि सफलता के मार्ग में आप शैतान आलस्य के चंगुल से बाहर रहें, अर्थात टालमटोल की प्रवृत्ति से दूर रहें। **शेक्सपीयर** ने कहा है–

'आज का दिन घूमने में खो दो– कल भी वही बात होगी और फिर आलस्य आ जाएगा।'

टालमटोल की प्रवृत्ति से बचने का सरल तरीका यह है कि आप सुबह जल्दी उठने की आदत डालकर दृढ़ता के साथ समय की पाबंदी करना शुरू करें। ऐसा करने से मुझे विश्वास है, आप जिम्मेदारियाँ स्वीकारने में दो कदम आगे रहेंगे और सफलता की ओर बढ़ते रहेंगे।

"The time to repair the roof is when the sun is shinning."

(8)

आप जितना संघर्ष करेंगे, उतना ही निखार आपके व्यक्तित्व में आएगा, जो आपको सफलता के शिखर पर ले जाएगा।

संघर्ष हमारे जीवन के उत्कर्ष का एक उत्तम साधन है, जो बाधाओं और कठिनाईयों के बीच एक निरंतर प्रयास का रूप है। इसमें बारह मानवीय गुणों का समावेश है, जिनके अभाव में हमारी श्रम–शक्ति बेअसर बनी रहती है। उदाहरण के लिए आप परिश्रमी हैं, लेकिन कार्य के प्रति उत्साह कम है, ऐसी स्थिति में आपके श्रम का फल उतना नहीं होगा जितना आप पूरे उत्साह के साथ काम करने में पाएंगे। अतः जरूरी है कि संघर्ष–शक्ति के लिए आपमें बारह गुण भी मौजूद हों जो इस प्रकार हैं –

- दृढ़ इच्छा–शक्ति
- लगन व साहस
- उत्साह
- श्रम–शक्ति
- आशा
- धैय व सहनशीलता
- आत्मा–विश्वास
- चरित्र–बल
- समय की पाबन्दी
- शिष्टाचार एवं व्यवहार कुशलता
- मन की एकाग्रता
- खोजी–प्रवृत्ति

संघर्ष शुरू में भयभीत अवश्य कराता है, थकाता है और तोड़ने का अहसास कराता है, लेकिन इस अहसास से मुक्त होने के लिए साहसी पुरूष संघर्ष के दौरान विपरीत परिस्थितियों से जूझने को कटिबद्ध बने रहते हैं। जीवन अपने आप में एक अनवरत संघर्ष है। संघर्ष से हमें जीवित रहने का अहसास होता है। आसान विजय तो सस्ती होती है, पर संघर्ष से हासिल जीवन का मूल्य होता है। बाधाएं हमें आत्मज्ञान कराती है और हमें दिशा देती है कि हम किस मिट्टी के बने है।

गिलबर्ट चेस्टरटन ने कहा है–

'बारिश के बगैर जीवन के आसमान पर इन्द्रधनुष नहीं बनता है।'

तात्पर्य यह है कि वे लोग ही महान बनते हैं जो जीवन में बार–बार बाधाओं से घिर जाने पर भी अपने निर्धारित कार्य को बीच में नहीं छोड़ते, बल्कि उत्साह के साथ उसे उत्कृष्ट बनाने में संघर्षशील बने रहते हैं।

याद रखें .....

संघर्ष में वही रथ काम आता है, जिस पर चढ़कर **मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम** ने रावण को जीता था। जिस समय श्रीराम और रावण के बीच युद्ध होने लगा तो विभीषण ने स्नेहवश उनसे पूछा – 'हे नाथ! आपके पास न तो रथ है और न तन की रक्षा करने वाला कवच और न ही आप पाँव में कुछ पहने हुए हैं, फिर आप बलवान रावण से कैसे जीत पाएँगे?' इस पर **श्रीराम** बोले – **'मित्र, जिससे विजय होती है, वह रथ दूसरा ही है– शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिए हैं, सत्य और शील उसके मजबूत ध्वज और पताका हैं। बल, विवेक और परोपकार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जुड़े हुए हैं।'**

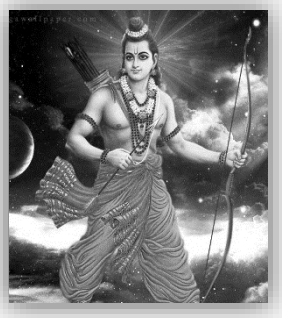

स्पष्ट है, संघर्ष की जीत में मानवीय गुणों का बड़ा भारी महत्व होता है, जिनके अभाव में आपकी श्रम–शक्ति बेअसर बनी रहती है। अतः संघर्ष करने के लिए जरूरी है कि आप अपने व्यक्तित्व में उन सभी–गुणों को विकसित करें जो यहां ऊपर दिए गए हैं। यह संघर्ष ही आपको सफलता के शिखर पर ले जाएगा।

'दुनिया में महत्वपूर्ण कार्य उन लोगों के लिए हैं, जिन्होंने कठिनाईयों में भी अपने प्रयास जारी रखें।'

–डेल कार्लेगी

(9)

अध्यात्म को जीवन का अंग मानें, जिससे आप सफलता के मार्ग में प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करने से बचे रहें, क्योंकि वे सकारात्मक दृष्टि से उन्नति में सहायक होते हैं।

याद रखें ....

जीव और प्रकृति दोनों ईश्वर की शक्तियाँ हैं और ये उसी के द्वारा नियंत्रित हैं। प्रकृति के कार्यों में कोई भी गलती नजर नहीं आती और न ही उनमें यथार्थता की कमी प्रकट होती है। उदाहरण के तौर पर गुलाब उसी तरह खिलता है, कण उसी की तरह बनता है जिस तरह वह सृष्टि के आरम्भ से बनता चला आया है। प्रकृति के कार्य इतनी सतर्कता से होते हैं कि ग्रहण ठीक समय पर लगते हैं। रात व दिन ठीक समय पर आते–जाते हैं और इस प्रकार प्रकृति के रूप ईश्वर के कार्य की सूक्षम यर्थार्थता का परिचय देते हैं, लेकिन मनुष्य (विवेक–युक्त जीव) की जरा–सी भूल से रेल–दूर्घटना हो जाती है और देश में खलबली मच जाती है, जबकि जीव चेतन है और प्रकृति जड़ है।

स्पष्ट है, ईश्वर के बनाए सभी नियम शाश्वत है, अटल हैं, निश्चल हैं, हमें उनकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए और न ही उनका उल्लंघन करना चाहिए। इसलिए जरूरी है कि उसके बताए मार्ग के अनुसार एक सफल जीवन बनाने के लिए आप कर्त्तव्य–स्वरूप सदैव चैतन्य बने रहें और आत्मस्तर पर भी उन्नति करें। ऐसा करने से आपकी मानसिकता में जीवन के प्रति अनुकूलता बनी रहेगी, और फिर आप सकारात्मक सोच के साथ स्थायी सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते रहेंगे।

(10)

भाग्य तभी साथ देता है, जब आप काम के प्रति पूर्णतः समर्पित रहते हैं – यह गीता में क्षी कृष्ण का कथन है। अतः आप भाग्यवादी नजरिया (Fatalistic attitude) को न अपनाएँ।

भाग्यवादी नजरिया वाला व्यक्ति उस गाय की तरह है जो खूंटे से बंधी होती है और उसकी रस्सी के कई लपेटे खूंटे में लगे रहते हैं। जितना चारा उस गाय के सामने आता है उसी को वह भक्षण कर लेती है और बाद में भूखी रहने पर चुपचाप आसूं बहाती रहती है। इसी प्रकार वह व्यक्ति अपने भाग्य रूपी खूंटे से बंधकर पुरूषार्थ रूपी प्राप्त–स्वतंत्रता से वंचित रह जाता है और निष्क्रियता को प्राप्त होकर यह विचार करता है, 'हमें मानव–जीवन सुख–सुविधाएं भोगने के लिए मिला है और ये सब कुछ एक दिन अवसर आने पर हमें सहज रूप से हासिल हो जाएंगे।' लेकिन जब ऐसा नहीं होता, तो इसे ईश्वर और भाग्य को कोसने में देरी भी नहीं लगती हैं।

एक व्यक्ति भगवान का भक्त था। एक बार उसके मन में करोड़पति बनने की इच्छा जाग्रत हुई। वह रोज मंदीर में यही प्रार्थना करता रहता। कई वर्ष बीत गए। एक दिन करूणानिधि प्रकट हुए और उस

भक्त से बोले, 'तु क्या चाहता है ?' वह बोला – 'भगवान्! कुछ ऐसा कर दो कि मैं करोड़पति बन जाऊँ।'

भगवान ने कहा, 'कुछ ऐसा ही कर दूँगा, क्योंकि तेरी भक्ति से प्रसन्न हूं, मगर तू भी कुछ कर।' भक्त ने आश्चर्य से पूछा – 'मैं क्या करूँ भगवान्!' मैं तो आपकी भक्ति करता ही हूं। भगवान ने कहा – 'यह मेरी भक्ति का ही फल है कि तू निक्म्मा होकर भी भूखा नहीं रहता। यदि तुझे धनवान बनना है, तो पुरूषार्थी बन, कुछ कार्य कर। जो मनुष्य मुझ पर विश्वास करके निष्काम–कर्म करता है, मैं उसकी हर इच्छा को पूर्ण करता हूं।'

याद रखें .....

पुरूषार्थ करने से ही 'सफल जीवन' बनता है, केवल भाग्यवादी रहकर नहीं। भाग्य तो अतीत में किए गए कर्मों के संचित फलों का पूल है, जो मनुष्य को सुख–दुःख के रूप में भोगने को मिलता हैं और वे फल भोगने के पश्चात् क्षीण हो जाता हैं। विशेष बात यह है कि उन फलों के भोग करने का समय भी निश्चित नहीं हैं। ऐसी स्थिती में वह कब तक भाग्य के भरोसे सुख की प्रतीक्षा करता रहेगा।

यथार्थ में पुरूषार्थ करने में ही जीवन की सफलता सुनिश्ति है, जबकि व्यक्ति भाग्य के सहारे निष्क्रियता को जन्म देकर अपने सुनहरे अवसर को नष्ट कर देता है। महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण यदि चाहते, तो पाण्डवों को पलक झपकते ही विजय दिला देते, किन्तु वे नहीं चाहते थे कि बिना कर्म किए उन्हें यश मिले। उन्होंने अर्जुन को कर्मयोग का पाठ पढ़ाकर उसे युद्ध में संलग्न कराया और फिर विजय–श्री एवं कीर्ति दिलवाकर उसे लोक–परलोक में यशस्वी बनाया।

अतः आप विकास की नई–नई मन्जिलें तय करने और उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंचने के लिए अपने पुरूषार्थ को कभी शिथिल न होने दें और पूर्ण उत्साह के साथ आगे बढ़ते रहें।

"Everyman is the architect of his own fortune."

-Anonymous

(11)

आपका चरित्र ऐसा हो कि आप कभी अपने परिचितों से 'सेलेबल' (यानी बिकाऊ) न समझे जाएँ, अन्यथा वे आप में विश्वास करना छोड़ देंगे।

किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए आपको साधना की जरूरत होती है। यह साधना तभी पूरी होती है, जब आप अपने सिद्धांतों पर अटल रहते हैं। यदि आप किसी व्यवसाय या पेशे में सफलता पाने के लिए अपने सिद्धांतों से हटकर अपने आपको बेच देते हैं, तो क्या भविष्य में आप पर कोई विश्वास करेगा, निर्भर करेगा? बिलकुल नहीं, भले ही आप सुशिक्षित, कुशल और अपने व्यवसाय के विशेषज्ञ ही क्यों न हो? चरित्र का एकमात्र दोष ही आपके समस्त गुणों के प्रभाव को नष्ट कर देता है और आपकी साधना भंग हो जाती है, तब आपको सफलता कहाँ से मिलेगी? अतः जरूरी है कि आपका चरित्र निर्मल, स्वच्छ हो, आपका ह्रदय ट्रांसपेरेंट हो, जिससे लोग आपको सदैव विश्वास पात्र मानें।

'चरित्र' व्यक्ति के नैतिक मूल्यों, विश्वासों और शख्सियत से मिलकर बनता है, जो उसके व्यवहार और कार्यों में झलकता है। इसे दुनिया को बेशुमार दौलत से भी ज्यादा संभालकर रखने की जरूरत होती है। Samuel Smiles का कहना है–

"The crown and glory of life is character. It is noblest possession of man. It exercises a greater power than wealth and secures all the honour without the jealousies of fame."

स्पष्ट है, चरित्र संसार की सब शक्तियों पर छा जाने वाली महाशक्ति है, अर्थात् जिसके पास चरित्र रूपी धन है, उसके सामने संसार भर की विभूतियाँ, सम्पत्तियाँ और सुख–सुविधाएँ घुटने टेक देती हैं। **सुभाषचन्द्र बोस के चरित्र को देखकर अनगिनत युवक–युवतियों ने उनके इस वाक्य 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' पर अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। एक धोती से अपने शरीर को लपेटने वाले महात्मा गांधी पर विश्व की कौनसी शक्ति कुर्बान नहीं थी?**

चरित्र–बल से सम्पन्न व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में अडिग रहता है। वह भेड़ों की तरह व्यवहार नहीं करता। वह अपनी स्वाभाविक प्ररेणाओं के अनुसार कार्य करता है, अर्थात जो कार्य उसकी अंतर्आत्मा को स्वीकार नहीं, उसे वह नहीं करता। निश्चय ही ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी हार नहीं सकता। हर जीत उसकी प्रतीक्षा करती है, उसके पास चलकर आती है, क्योंकि उसके नेतृत्व में निर्मलता की चमक हैं, उसकी वाणी में स्पष्टता है– सफलता है। उसकी सोच सकारात्मक होती है, क्योंकि वह सभी प्रकार के मनोविकारों से मुक्त रहता है। उसके व्यक्तित्व में वह चुम्बकीय शक्ति है, जो सामने वाले को वशीभूत कर अपनी ओर खींच लेती है, क्योंकि उसके चेहरे की मुस्कान यह संदेश देती है– **'आओ, मैं**

खुश हूँ, मुझसे बात करो।' लार्ड केनिंग ने शायद इसीलिए यह कहा है – '**मैं चरित्र के रास्ते पर चलकर बल प्राप्त करूँगा, दूसरा रास्ता नहीं पकडूँगा।**'

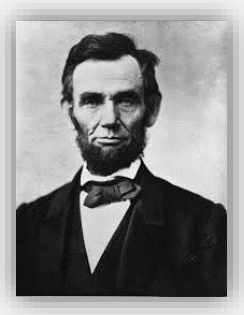

अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के पूर्व **अब्राहम लिंकन** एक विख्यात वकील थे। उन्होंने इस पेशे में कभी झूठा मुकदमा नहीं लिया था। एक बार एक महिला ने उन्हें दो सौ डॉलर अपने मुकदमे की फीस के रूप में दिए। मुकदमा देखने के बाद उन्होंने उस महिला से कहा, 'मैडम, आपका मुकदमा ठहर नहीं सकता, अतः आप ये डॉलर्स वापस ले जाइए।' महिला ने कहा – ''यह आपकी मुकदमा देखने की फीस है।' 'नहीं–नहीं, मैं अपने कर्त्तव्य–पालन की फीस नहीं लेता'' – लिंकन ने उत्तर दिया। ऐसा था व्यक्तित्व अब्राहम लिंकन का, जिसमें उनका चरित्र बोलता था– सत्य, ईमानदारी और आत्मविश्वास।

चरित्र के अन्तर्गत व्यक्ति में मन, वचन एवं वाणी से सम्बन्धित प्रक्रिया एवं समस्त कार्य–कलाप आ जाते हैं। इतना ही नहीं, उसकी चेतना का विकास भी उसके चरित्र का अंग बनता है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शुद्ध चेतन–स्वरूप में स्थिर हो जाने का परामर्श दिया था, जिससे वह गतिशीलता को प्राप्त कर विजयी हो। **उनके उपदेश का आशय यही था कि मानव स्वयं के चरित्र का निर्माण करे, जिसके बल पर ही वह अपनी निश्चयात्मक बुद्धी से चेतना को शुद्ध बनाए रखेगा और फिर निरन्तर आत्म–उन्नति करता हुआ अपने जीवन को सार्थक कर सकेगा, यानी स्थायी सफलता प्राप्त करेगा।** आत्मबल होने के कारण चरित्र हमारी स्थायी सम्पत्ति है और इसी को लक्ष्य करते हुए G. Boardman ने कहा है–

"Sow an act and reap a habit,

Sow a habit, you reap a character,

Sow a character, you reap a destiny."

(अर्थात कर्म का बीज बोओ और आदत की फसल काटो, आदत की बीज बोओ और चरित्र की फसल काटो, चरित्र का बीज बोओ और भाग्य की फसल काटो।)

चरित्र की एक खास विशेषता यह होती है कि इससे सम्पन्न व्यक्ति के कार्यों को देखकर ईश्वर भी उसे उचित समय पर पुरस्कृत करता है, अर्थात उसे अमरत्व प्रदान करता है। ऐसे आदर्श व्यक्ति की मान्यता सदा संसार में सर्वत्र बनी रहती है, क्योंकि उसके व्यक्तित्व में निर्भीकता, मानवता और समानता के भाव प्रकाशित होते हैं। उसके जीवन में गोपनीयता के लिए कोई स्थान नहीं होता, जैसा कि अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट के बारे में कहा जाता है। अतः आप भले ही–

- कम शिक्षित हों,
- थोड़ी लियाकत लिए हों,
- निर्धन हो, अथवा

- समाज में मामूली स्थिति वाले हो,

फिर भी आप में यदि महान् चरित्र है, तो उसका असर एक दिन जरूर होगा। आपको समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी और आप स्थायी तौर पर एक सफल व्यक्ति माने जाएँगे।

अंत में **चरित्र की महानता का एक उदाहरण** यहाँ पढ़िए–

नंगे पैर, चिथड़े कपड़े पहने हुए एक लड़के ने आगे बढ़कर एक राहगीर से कहा– 'साहब दो–चार डिब्बियाँ दियासलाई की खरीद लीजिए।'

राहगीर बोला – 'नहीं भाई, मुझे जरूरत नहीं है।'

'ले लीजिए, पचास पैसे की ही तो एक डिब्बी है,' कहकर लड़का उस सज्जन के मुँह की ओर देखने लगा। थोड़ी देर में वह फिर बोला, 'अच्छा, एक ही डिब्बी ले लीजिए।'

किसी तरह उससे पीछा छुड़ाने के लिए राहगीर ने एक डिब्बी ले ली, पर जेब में जब देखा कि खुले पैसे नहीं है तो उसे वापिस कर दी और कहा कि तुमसे कल जरूर खरीद लूंगा, क्योंकि मेरे पास खुले पैसे नहीं है। लड़का नम्रतापूर्वक बोला, 'आज ही ले लीजिए, मैं पैसे तुड़वाकर ला देता हूँ।'

बालक की बात मानकर उन्होंने एक डिब्बी लेकर उसे दस रूपए का नोट दे दिया और वहीं खड़े होकर उस लड़के की प्रतीक्षा करने लगे। जब थोड़ी देर हो गई और लड़का नहीं लौटा, तब उन्होंने सोचा, शायद अब वह नहीं लौटेगा, अतः वह अपने घर चले गए।

दूसरे दिन सुबह नौकर ने खबर दी कि एक लड़का उनसे मिलने आया है। उन्होंने उत्सुकता से बालक को अंदर बुलाया। वह देखते ही समझ गए कि यह उस दियासलाई वाले लड़के का भाई है। उसके चेहरे की हड्डियाँ चमक रही थीं, पर उस स्थिति में भी उसके चेहरे पर चमक थी।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह लड़का बोला – 'क्या आपने ही मेरे भाई से दियासलाई की डिब्बी खरीदी थी, साहब?'

'हाँ, खरीदी तो थी।'

'लीजिए, ये नौ रूपए पचास पैसे, वह स्वयं नहीं आ सका। वह वापस लौटते हुए एक मोटर गाड़ी से टकरा गया था, जिससे उसकी टोपी, माचिसें और पैसे न जाने कहाँ गुम हो गए। उसकी टांगों की हड्डियाँ टूट गई हैं, उसकी हालत खराब है। उसने किसी तरह से ये पैसे आपको भेजे हैं। यह कहते ही बालक की आँखों में आँसू बहने लगे। उसको देखकर उस भद्र पुरूष का हृदय द्रवित हो गया और वह तुरन्त उसके साथ घायल बालक को देखने चल दिए।'

आकर क्या देखते हैं कि वह निःसहाय बालक एक बूढ़े शराबी के घर में रहता है, वह घास के ढेर पर लेटा हुआ है। वह उन्हें देखकर ही पहचान गया और लेटे हुए बोला– 'साहब, मैंने पैसे तो तुड़वा लिए थे, लेकिन लौटकर मैं आ ही रहा था कि कार से टकराकर गिर गया और मेरी दोनों टांगें टूट गई।' इतना कहकर वह दर्द से कराहते हुए अपने छोटे भाई से बोला – 'मेरी मौत तो सामने खड़ी है, पर अब

तुम किसके भरोसे रहोगे?' यह कहते हुए वह रोने लगा और उसने छोटे भाई को गले से चिपका लिया। दोनों बालकों की आँखों में आँसू बह रहे थे।

उस सज्जन ने उस दुर्घटनाग्रस्त बालक का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा– 'बेटे, तुम चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे भाई की देखभाल करूँगा।' बालक ने अपने शरीर की सारी शक्ति बटोरकर उनकी ओर प्रार्थना की दृष्टि से देखा। उसकी आँखों से कृतज्ञता टपक रही थी। उसका दिल कुछ कहना चाहता था, पर जुबान साथ न दे सकी और उसी समय उसकी आँखें मुंद गई और उसने संसार से विदा ले ली।

इस उदाहरण में ईश्वर ने उस छोटे से घायल बालक को जीवन के ऊँचे सिद्धांत सिखा दिए थे। वह ईमानदारी, सच्चाई, सहृदयता और महानता के मूल्यों को अच्छी तरह जानता था। इन्हीं महान गुणों से मनुष्य देवता कहलाता है। ऐसे चरित्र के धनी लोग ही इहलोक और परलोक में पूजे जाते हैं।

जर्मन महाकवि एवं लेखक **गेटे** ने कहा है–

'चरित्र का निर्माण संसार में संघर्ष के माध्यम से होता है।'

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि जिनके पास अकूत धन है, उनके पास चरित्र भी होगा, मगर यह आवश्यक नहीं। ऐसे लोगों में बहुत से धनवान ऐसे हैं जिनके पास चरित्र नाम की शक्ति होती ही नहीं, क्योंकि धन की लालसा और धन–सृजन के स्रोत उनके सदाचार का गला घोंट देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे भय, चिंता, तनाव, ईर्ष्या, संशय आदि जैसे मनोरोग से पीड़ित रहते हैं।

अतः जरूरी है कि **धन के सृजन में संयमता बरती जाए–** जिससे चरित्र को बल मिले और आप महानता हासिल करें। चरित्रवान लोग आत्मा–सम्मान और प्रतिष्ठा के प्रति पूर्ण सजग रहते हैं और आत्मविश्वास के साथ जीवन के हर क्षेत्र में सफलता और सम्मान प्राप्त करते हैं।

(12)

आपका प्रत्येक क्षण एक 'अवसर' (Opportunity) है इसे आप पहचानें, पकड़ें और उससे फायदा लें। अतः अपना क्षण कभी व्यर्थ न जाने दें।

स्वर्ण के प्रत्येक कण की तरह समय का प्रत्येक क्षण मूल्यवान है, अतः आप फुर्सत का प्रत्येक क्षण काम में लें और इसे व्यर्थ न जाने दें। बालक **माइकल फैराडे** पुस्तकों पर जिल्द बाँधा करता था और अपने बचे हुए समय में वह वैज्ञानिक परीक्षण करता था। **महात्मा गाँधी** गीता को अपने साथ लेकर चलते थे

और फुर्सत के क्षणों में इसका ज्ञान अर्जित करते थे। इसी तरह कवि बर्न्स खेतों में काम करते हुए प्रतिदिन फुर्सत के क्षणों का साहित्य लिखने में सदुपयोग करते थे।

When moment is mine,

it makes my future;

I never look back

In the mind of nature.

A think of moment

Is beauty of glory,

I'm all the time

in flowers' valley.

(13)

समय का आदर करने से जीवन व्यवस्थित बनता है। इसलिए जरूरी है कि आप समय–प्रबंधन (Time-Management) को महत्व दें।

पिटमैन ने कहा है– *"Well arranged time is the surest mark of a well arranged mind."*

समय–प्रबंधन का सीधा–सा अर्थ है अपनी दैनिकचर्या को व्यवस्थित करना। इसके लिए आप टाइम टेबिल बनाकर निश्चित करें कि आपको किस समय क्या करना है। ऐसा करने से आप–

- समय में पाबंद होते हैं।
- सुव्यवस्थित ढंग से अपने सभी कार्य समय के अंदर पूरा करते हैं।
- आप तनावों से दूर रहते हैं और चिंता–मुक्त होकर अपने स्वस्थ मन से नवीन विचारों का सृजन करते हैं।
- आपकी सोच सकारात्मक होती है।
- आप प्रत्येक क्षण को मूल्यवान समझकर उसका सदुपयोग करते हैं।
- जीवन की हर बाजी जीतने के लिए आप उत्साही बने रहते हैं।

संक्षेप में, समय–प्रबंधन के जरिए आप अपने भाग्य के निर्माण में अपनी सहायता करते हैं। इसी में आपके व्यक्तिव का विकास है और आपकी स्थायी सफलता सुनिश्चित है।

याद रखें .....

समय–प्रबंधन को प्रभावकारी बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप सबसे महत्वपूर्ण कार्य सबसे पहले करें, यानि First Thing First । इसके लिए आप रोज कामों को प्राथमिकता के आधार पर तीन श्रेणी में बांट लें–

क.) तत्काल कार्य, यानि जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य हैं और इन्हें शुरू में करते होते हैं। ऐसे कार्य 'अत्यावश्यक' भी कहे जाते हैं।

ख.) महत्वपूर्ण कार्य, यानि जो आवश्यक है और 'अत्यावश्यक' के बाद काम करने को लिए जाते हैं।

ग.) सामान्य कार्य, यानि जो गैर–महत्वपूर्ण हैं और अंत में किए जाते हैं।

'तत्काल' काम आमतौर पर हमारे सामने होते हैं और अक्सर वे आसान तथा रूचिकर होते हैं। कभी आपको ऐसा लग सकता है कि वे कम महत्व के हैं, लेकिन संकटकालीन अवस्था में इन्हें सबसे पहले करना पड़ता है।

दैनिक कार्य–सूची

दिनांक..... दिन.....

A.	अत्यावश्यक कार्य	B.	महत्वपूर्ण कार्य	C.	सामान्य कार्य
1.		1.		1.	
2.		2.		2.	
3.		3.		3.	
4.		4.		4.	
5.		5.		5.	

कृपया ध्यान दें–

- ✓ जब आप काम शुरू करें तो 'A' कॉलम के पहले काम से शुरू करें। इस तरह इस कॉलम के काम निबट लें।
- ✓ 'A' कॉलम के बाद 'B' कॉलम के काम पूरे करें और इसके बाद ही बाकी समय में 'C' कॉलम के काम लें।

- ✓ यदि आप टाइम टेबल में 'अत्यावश्यक' और 'महत्वपूर्ण' कामों को जमाना चाहते हैं, तो उन्हें hour-by-hour लिखें। 'A' – 'B' न लिखें। ऐसा करना भी तभी संभव है जब आप निश्चित तैर पर यह जानते हैं कि कौनसा काम कब किया जाना है। अन्यथा आप केवल समय–सीमा वाले काम ही लिखें।
- ✓ यदि आप टाइम टेबिल नहीं बनाते हैं, तो यह कार्य–सूची (जिसे 'To-do-List' कहते हैं। आप अपने मोबाईल पर To do List बनाने के लिए इस App का प्रयोग कर सकते है – Todoist) एक दिन पहले तैयार की जाती है। यानि हम आज उन कामों की योजना बनाएं जो कल करने हैं।

इस तरह आप देखेंगे कि आप सीमित समय के अंदर अपने अधिक कामों को पूरा कर रहे हैं।

(14)

सफलता या असफलता हमारे शब्दों में छिपी है। इसलिए जरूरी है, अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना।

मनु स्मृति में कहा गया है– *'समस्त कार्य वाणी द्वारा नियंत्रित होते हैं, उनकी उत्पत्ति वाणी द्वारा ही होती है। अतः वाणी पर मन का नियन्त्रण आवश्यक है।'*

तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को जीवन में सफलता–असफलता, यश–अपयश, प्यार–घृणा, सब कुछ उसकी वाणी से मिलते हैं। मधुर वाणी से मधुर फल मिलता है और कठोर या कड़वी वाणी से कुफल मिलता है। गुरू नानकदेव की वाणी है–

"शब्द के संवाद से शिव, ब्रह्मा और इंद्र की शक्ति प्राप्त हो सकती है। व्यक्ति का पिछला जीवन चाहे जैसा रहा हो, शब्द संवाद द्वारा वह सम्मान प्राप्त कर सकता है।"

गुरू नानकजी की उक्त सूक्ति यह स्पष्ट करती है कि शब्दों को मिलाकर जो भावनाएँ आप व्यक्त करते हैं, यदि वे अच्छी हों तो आप उससे ईश्वर की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आपके पास अच्छा शब्द–भण्डार है तो आप सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। शब्द ही समाज को एक सूत्र में बाँधते हैं। अंग्रेजी में कहावत है, "A word fitly spoken is like an apple of gold in the picture of silver." एक अच्छा शब्द बोलकर आप दूसरे के ऊपर आसानी से अहसान कर देते हैं, लेकिन किसी की निंदा न करने के लिए मौन रहना आवश्यक है और इसमें आपकी पॉकेट से कुछ नहीं जाता।

हमारे पूर्वजों ने कहा है– **'पहले तोलो, फिर बोलो।'** अतः बोलने से पहले आप यह भी विचार करें कि–

- क्या बोलना है?

- किस विषय पर बोलना है?
- क्यों बोलना है?
- जो कुछ आप कहने जा रहे हैं, क्या वह बोलने योग्य है? और इसका प्रभाव कैसा होगा?

(15)

'Over-confidence' सफलता के डर का दूसरा नाम है, जो असफलता का कारण बनता है। अतः इस प्रवृत्ति से दूर रहें।

गोल्फ का एक विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी है– ग्रेग नॉर्मन। वह शुरू के मैचों में शानदार प्रदर्शन करता हुआ एक टूर्नामेंट के फाइनल तक पहुंच गया था। पहले दिन उसका प्रदर्शन बेहद बढ़िया रहा। अतः सभी को उसके विजेता होने की संभावना थी, किन्तु अंतिम समय में नॉर्मन बेहद खराब खेला। फलतः वह जीत के करीब पहुंचकर भी विजेता नहीं बन पाया।

इस उदाहरण में आपको सफलता के डर की एक झलक मिलती है।

मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे कई लोगों का अध्ययन किया है, जिनको सफलता के डर ने गर्त की ओर धकेला। मन में समायी आकांक्षा को यथार्थ में बदलते समय उन लोगों के क्रियाकलाप ऐसे हो गए मानों वे सफलता को नहीं पचा पाए। ऐसी स्थिति का अनुभव स्वयं मैंने भी किया था, जब मैं बी.कॉम की परीक्षा में Statistics के पेपर को पढ़कर बेहद खुशी से उछल पड़ा, लेकिन उसे हल करते समय मेरी याद्दाश्त न जाने कहाँ चली गई थी कि मैं पूरे अंक पाने से वंचित रह गया। घर लौटने पर मैंने खुद से पूछा कि जब पूरे अंक प्राप्त करने का समय था, तब मैं क्या रहा था? क्यों मैं निकम्मा बना रहा? मुझे चेतना से यह उत्तर मिला – **तुम्हारा over-confident होना।** यह over-confidence ही सफलता के डर का दूसरा नाम है, जो असफलता का कारण बनता है। अतः आप ऐसी प्रवृत्ति से सदैव ही दूर रहें।

(16)

सफलता का मूलमंत्र है – अपने कार्य को सर्वश्रेठ तरीके से करना। यह तभी संभव है जब आप अपनी क्षमता का सौ प्रतिशत इस्तेमाल करते हैं।

सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए कर्मशील व्यक्ति अपने पुरूषार्थ से भाग्य को भी बदल देता है।

राजा **विक्रमादित्य** के पास सामुद्रिक लक्षण जानने वाला एक ज्योतिषी पहुँचा। विक्रमादित्य का हाथ देखकर वह चिंतामग्न हो गया। उसके शास्त्र के अनुसार तो राजा दीन, दुर्बल और कंगाल होना चाहिए था, लेकिन वह तो सम्राट थे, स्वस्थ थे। लक्षणों में ऐसी विपरीत स्थिति संभवतः उसने पहली बार देखी थी। ज्योतिषी की दशा देखकर विक्रमादित्य उसकी मनोदशा समझ गए और बोले कि 'बाहरी लक्षणों से यदि आपको संतुष्टि न मिली हो तो छाती चीरकर दिखाता हूँ, भीतर के लक्षण भी देख लीजिए।' इस पर ज्योतिषी बोला – 'नहीं, महाराज! मैं समझ गया कि आप निर्भय हैं, पुरूषार्थी हैं, आपमें पूरी क्षमता है। इसीलिए आपने परिस्थितियों को अनुकूल बना लिया है और भाग्य पर विजय प्राप्त कर ली है। यह बात आज मेरी भी समझ में आ गई है कि युग मनुष्य को नहीं बनाता, बल्कि मनुष्य युग का निर्माण करने की क्षमता रखता है यदि उसमें पुरूषार्थ हो, क्योंकि एक पुरूषार्थी मनुष्य में ही हाथ की लकीरों को बदलने की सामाथ्य होती है।'

स्पष्ट है, पुरूषार्थी बनने के लिए आपको दो बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना है–

1. अपने इस विश्वास को बल प्रदान करें कि आप शिखर पर चढ़ने के लिए पूर्णतः समक्ष हैं, अर्थात् अपनी क्षमता का सौ प्रतिशत उपयोग करने के लिए आप संकल्पबद्ध हैं। **सर एडमण्ड** और **शेरपा तेंनजिंग** से पूर्व कई लोगों ने हिमालय की 'एवरेस्ट' चोटी पर चढ़ने के प्रयास किए थे, परन्तु ये दोनों ही इस मिशन में सफल हो सके, जिसका कारण था– **अपनी क्षमताओं पर उनका अटूट विश्वास।**

अब प्रश्न यह है कि **आप अपनी क्षमताओं में विश्वास कैसे बढ़ाएँ ?** इसके लिए आप इन तीन बातों पर ध्यान दें–

सर्वप्रथम अपने जीवन की अकांक्षाओं को टटोलें। यदि आपकी आकांक्षाएं अधिक हैं तो उन्हें क्रमानुसार प्राथमिकता देते हुए एक कागज पर लिख लें और फिर मनन करके देखें कि आपको उनमें से किसमें अधिक वास्तविकता दिखाई देती है, जिससे आपको दुविधा का सामना न करना पड़े।

जिसमें वास्तविकता दिखाई देती है, उसे साकार रूप देने हेतु किए जाने वाले प्रयासों को आप सुनिश्चित कर उन्हें लिख लें।

अब आप अपनी उन कमियों अथवा कमजोरियों का उल्लेख करें, जिनका आप लक्ष्य की पूर्ति में अनुभव कर सकते हैं। इन कमजोरियों को अपनी सफलता के मार्ग में बाधक नहीं बनने दें, इससे पूर्व ही उसका निवार कर लें।

इस प्रकार से आप एक नई ऊर्जा का सृजन करेंगे, जिससे आपके मन–मस्तिष्क में सकारात्मक विचार ही बनेंगे और अपनी क्षमताओं पर निरंतर ध्यान देते हुए उनका पूरा उपयोग सर्वश्रेष्ठ तरीके से करेंगे।

2. **हर उपलब्धि श्रम चाहती है।** जिसमें श्रम–शक्ति होगी, वह संघर्ष का दामन थामेगा और मनचाही उपलब्धि का मालिक बन जाएगा। दुनिया में जितने भी महान् व्यक्ति सफल हुए हैं, उन सभी ने किसी न किसी रूप में संघर्ष किया और तब कहीं चमत्कारिक सफलताएं उन्होंने हासिल की। **हेनरी फोर्ड** ने अपने जीवन की शुरूआत साइकिल में पंक्चर लगाने से की थी। अतः आप भी संघर्षप्रिय बनने के लिए

ये बातें ध्यान में रखें–

- जो बार–बार बाधाओं के आने पर भी आरम्भ किए हुए निर्धारित कार्य को बीच में नहीं छोड़ते, वे उत्तम पुरूष हैं। ऐसे पुरूष अपने दृढ़ संकल्प, निश्चय व आत्मविश्वास के साथ कठिनाइयों एवं दुःखों से संघर्ष करते हुए उन पर विजय प्राप्त करके महान् बनते हैं।
- धन सदा साथ चलने वाली वस्तु नहीं है। संघर्षवान धन के बार–बार नष्ट होने पर भी उसे पैदा कर लेगा, लेकिन संघर्ष–शक्ति के अभाव में व्यक्ति प्राप्त अथाह संपत्ति को बर्बाद करके एक दिन फुटपाथ पर खड़ा दिखाई देगा। इसलिए चाणक्य ने कहा है – '**उत्तम पुरूष मान का ही धन मानते हैं।**'
- जीवन–युद्ध में कोई दुसरा व्यक्ति आकर आपकी मदद करेगा, इस भ्रम को मन से निकाल दें। अतः किसी की सहायता के इंतजार में मत बैठे रहिए, स्वयं उठिए और बाधाओं से जूझिए और आगे बढ़ते रहिए।
- भाग्य स्वयं नहीं जागता, इसके लिए आपको खुद उठकर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा और सफलतापूर्वक परिश्रम के फल का इंतजार करना होगा।
- कठिन परिश्रम, दृढ़ इच्छा–शक्ति, साहस व लगनशीलता ऐसे गुण हैं, जो आपको आकाश की बुलंदियों पर पहुंचा देते हैं, बशर्ते कि आप हारने पर भी संघर्ष में जुटे रहें।

अतः आप अपनी भरपूर क्षमताओं के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर आरूढ़ होइए और फिर आकाश को छू लीजिए।

चलते–चलते

30 वर्ष तक असफल रहने के बाद अब्राहम लिंकन 52 वर्ष की उम्र में अमेरिका के राष्ट्रपति बन पाए थे। लेकिन इससे पहले उनकी असफलता का यह रिकार्ड था–

- वे 21 वर्ष की आयु में व्यापार में असफल रहे।
- वे 22 वर्ष की आयु में विधानसभा के चुनाव में हार गये।
- वे 24 वर्ष की आयु में दुबारा व्यापार में असफल रहे।
- वे जब 26 वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया।
- 27 वर्ष की आयु में उन्हें नर्वस ब्रेकडाउन हो गया।
- वे 29 वर्ष की आयु में स्पीकर का चुनाव हार गये।

- वे 34 वर्ष की आयु में कॉग्रेशनल रेस हार गये।
- वे 45 वर्ष की आयु में सीनेटॉरियल रेस हार गये।
- वे 47 वर्ष की आयु में उप–राष्ट्रपति बनने से वंचित रह गये।
- वे 49 वर्ष की आयु में सीनेट में दुबारा हार गये।

इतनी असफलता के बाद भी वे निराश नहीं हुए, बल्कि एक नए उत्साह और समर्पण के साथ आगे बढ़ते रहे। अन्त में उन्होंने अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। क्या अब भी आप उनको असफल व्यक्ति कहेंगे ?

अतः आप भी घबारएँ नहीं, बल्कि पिछली असफलताओं से सीख लेकर आगे बढ़ते रहें और अपने उद्देश्य तक पहुँचे।

टॉम वैटसन सीनियर ने कहा है–

'अगर आप सफल होना चाहते हैं तो असफलता की दर दुगनी कर दीजिए।'

(समाप्त)

.....

5 सर्वश्रेष्ठ प्रेरणादायक किताबें जिन्हें आपको जरूर पढ़ना चाहिए

1. **जीत आपकी**
2. **सन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी**
3. **अलकेमिस्ट**
4. **अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें**
5. **बड़ी सोच का बड़ा जादू**

किताबें जलाने से भी बदतर अपराध हैं. उनमे से एक ना पढना